नेत्रहीन शिक्षकों के समक्ष चुनौतियां

सरिता बरारा

किसी भी शिक्षक के लिए स्कूल में पहले दिन छात्रों से रुबरू होना रोमांचक के साथ-साथ घबराहट भरा अनुभव होता है। यह तब और भी कठिन हो जाता है जब एक नेत्रहीन शिक्षक देखने में सक्षम छात्रों के सामने खड़ा होता है। छात्रों की प्रतिक्रिया क्या होगी? वह कैसे उनका सामना करेंगे/करेंगी?, कुछ आत्मविश्वास से भरे होते हैं तो कुछ घबराये हुए लेकिन वे भी तो इसी दिन की प्रतीक्षा कर रहे होते हैं। कुछ के लिए यह पल उनकी चेतना में हमेशा के लिए अमिट हो जाता है।

प्रीतम शर्मा कहते हैं, "आज भी वह दिन मुझे ऐसे याद है जैसे यह कल की ही बात है।" वह दिन 5 अप्रैल 1988 का था जब मुझे पहली बार कक्षा आठ के छात्रों को अलंकार पढ़ाना था। वह एक खुशनुमा अहसास था एवं विद्यार्थी भी काफी उत्साहित थे।

राजस्थान के छोटे से गांव में, एक अनपढ़ परिवार में जन्मे प्रीतम शर्मा 20 वर्षों तक स्कूलों में पढ़ाने के बाद आज दिल्ली स्थित रामजस कॉलेज में सहायक प्रोफेसर हैं।

स्कूल में लंबे समय तक पढ़ाने का अनुभव रखने वाले मुकेश गुप्ता याद करते हुए कहते हैं कि मैं भी उस दिन काफी तनाव में था।

"जब मैं पहली बार सामान्य बच्चों को पढ़ाने गया तो काफी परेशान था। शर्मीलेपन और अनुभवहीनता के कारण मैं काफी घबराया हुआ था। मुझे निश्चित अंदाजा नहीं था कि कैसी प्रतिक्रिया मिलेगी। यह एक तरह का रोमांच था जिसके बारे में बता पाना मुश्किल है। पर मैं एक बात पूरे विश्वास से कह सकता हूं कि सामान्य बच्चों के साथ मैं सिर्फ पहले दिन ही आत्मविश्वास से भरा हुआ नहीं था। उसके बाद से कभी भी मुझे इस तरह की किसी परेशानी का सामना नहीं करना पड़ा।"

ज्यादातर दृष्टिहीन शिक्षकों के लिए आज भी हमारे देश में उच्च शिक्षा के स्तर तक पहुंच पाना एक मुश्किल भरा कार्य है और ऐसे में यह और भी कठिन हो जाता है जब उपकरणों एवं मूलभूत सुविधाओं का अभाव हो।

कपिल कुमार मित्तल कहते हैं, "सामान्य छात्रों को पढ़ाना और भी मुश्किल भरा कार्य है।"

दिल्ली के नाथूपुरा स्थित गवर्नमेंट सीनियर सेकेन्ड्री स्कूल में शिक्षक के रूप कार्यरत दृष्टिहीन कपिल कुमार मित्तल कहते हैं, "हम जैसे दृष्टिहीन शिक्षकों के लिए छात्रों को पढ़ाते वक्त उनसे आंख ना मिला पाना एक बड़ी कमजोरी है जिससे हमें पार पाने की जरूरत है।"

कपिल कुमार मित्तल आगे कहते हैं, "अगर कक्षा में छात्रों की संख्या ज्यादा हो तो हम जैसे शिक्षकों को कक्षा में घूमने में भी परेशानी का सामना करना पड़ता है क्योंकि बेंचों के बीच काफी कम जगह बच पाती है। इसके परिणामस्वरूप कभी-कभी अधिक जवाब देने वाले एवं सक्रिय छात्र अधिक ध्यान आकर्षित करते हैं।"

कपिल कुमार कहते हैं, "अगर शिक्षा के अधिकार (आरटीई) कानून के नियमों के मुताबिक कक्षा में छात्रों की संख्या निर्धारित हो और उनके बैठने की व्यवस्था, दृष्टिहीन शिक्षकों को सुगमतापूर्वक सभी छात्रों तक पहुंचने की सुविधा देती है तो नजरों से नजर मिला सकने में अक्षम शिक्षकों की अक्षमता की समस्या पर आसानी से पार पाया जा सकता है।"

पालम गांव के जीबीएसएस स्कूल के उप-प्रधानाचार्य खेम चन्द्र शर्मा ने कहा, "हम हर विद्यार्थी के साथ आंख नहीं मिला सकते लेकिन इसका मतलब नहीं है कि कोई हमें बेवकूफ बना सकता है। आवाज के आधार पर हर विद्यार्थी को पहचानने और उनके बैठने की स्थिति के बारे में जानने में हमें कोई मुश्किल नहीं होती है। हम उनसे सवाल पूछते रहते है ताकि यह जान सकें कि वह सतर्क है या नहीं। इस दौरान हम विद्यार्थियों के चेहरे की अभिव्यक्ति नहीं देख सकते है।"

उन्होंने कहा, “कक्षा को नियंत्रित करने में विकलांगता कोई मुद्दा नहीं है। यह शिक्षक की अपनी पहल और योग्यता पर निर्भर करता है।“

अधिकांश शिक्षकों का मानना है कि ज्यादातर शिक्षकों के लिए चिंता का बड़ा कारण विकलांगता नहीं है बल्कि पर्याप्त बुनियादी ढांचें की कमी और विकलांग शिक्षकों के लिए स्कूल और कॉलेज दोनों स्तर पर पढ़ाने के लिए सहायताओं की कमी है। गार्गी कॉलेज के असिस्टेंट प्रोफेसर मुकेश गौतम ने कहा, “नेत्रहीन शिक्षकों की विकट समस्या के लिए बुनियादी संसाधनों की कमी ज्यादा जिम्मेदार है।“

उन्होंने कहा, “सुलभ प्रारूप में किताबें, स्क्रीन रीडर के साथ कम्प्यूटरें और अनुसंधान करने के लिए मूलभूत सुविधायें आवश्यक है। अगर सरकार सभी स्कूल और कॉलेज में यह सुविधा अनिवार्य कर देती है तो यह स्वत: ही नेत्रहीन शिक्षकों को ऐसा माहौल प्रदान करेगा, जो पढ़ाने के लिए सकारात्मक और सुगम होगा।“

पीजीटी में राजनीति शास्त्र पढ़ाने वाले खेम चन्द्र शर्मा ने कहा, “वर्तमान समय में कई ई-किताबें और नेत्रहीन लोगों के लिए सॉफ्टवेयर मौजूद है लेकिन सवाल यह है कि कितने शिक्षक खासतौर पर, गांव में पढ़ाने वाले इसका उपयोग कर रहे है।“

उन्होंने कहा, “संसाधनों की कमी के अलावा लोगों का रवैया भी बड़ा मुद्दा है। कॉलेज के विद्यार्थी ज्यादा बुद्धिमान, परिपक्व और समझदार होते है लेकिन स्कूलों में कभी-कभार कर्मचारी सहयोगी प्रवृत्ति के नहीं होते है। या तो नेत्रहीन शिक्षकों को काम नहीं देना चाहते है या नेत्रहीन शिक्षकों की क्षमता के बारे में अज्ञानता के कारण वह उनसे बुरा व्यवहार करते है।“

उन्होंने कहा, “उदासीन माहौल उनके काम को और मुश्किल बना देता है।“

राजधानी के आरएसबीवी झील खुर्जा स्कूल के उप-प्रधानाचार्य हरीश कुमार गुलाटी ने बताया कि कर्मचारी की स्वीकार्यता सबसे बड़ी समस्या है। उन्होंने कहा, “सहयोगी की नजर में स्वीकार्यता की कमी हतोत्साहित कर देती है।“

उन्होंने कहा, “नेत्रहीनों की क्षमता के बारे में जानकारी का अभाव, उच्च और सहयोगी के स्वीकार्यता की कमी और हतोत्साहित करने वाले लोगों के सामने हम जैसे शिक्षकों के आत्मविश्वास की कमी वजह है।“

ऐसे समय में संसाधनों की कमी और असहयोगी रवैये के कारण होने वाली निराशा से आत्म-विश्वास और कई लोगों का भरोसा ही आपको शक्ति प्रदान करता है।

नेत्रहीन शिक्षक प्रीतम शर्मा के लिए उनके अध्यापन पेशे का सबसे संतोषजनक और गौरवान्वित पल उस समय था, जब उनके द्वारा पढ़ाये गये कक्षा-10 और कक्षा-12 के सभी विद्यार्थियों ने बोर्ड की परीक्षा पास कर ली थी। किसी भी शिक्षक की आकांक्षा यह होती है कि उसके द्वारा पढ़ाए गए शत-प्रतिशत बच्चे परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाएं, खासकर नेत्रहीन शिक्षकों के लिए यह चुनौती तब औऱ बड़ी हो जाती है, जब वह देखने में सक्षम बच्चों को पढ़ा रहे हो।

उन्होंने कहा, “ बात सिर्फ पढ़ाने की नहीं होती बल्कि व्यवहार भी महत्वपूर्ण होता है, उनकी दुर्घटना के बाद उन्हें विद्यार्थियों से जो बर्ताव देखने में आया, उससे वह अभिभूत हो गए।“

उन्होंने कहा, “जैसे ही मेरी दुर्घटना की सूचना कक्षा-7 के विद्यार्थियों को मिली वैसे ही सभी 57 विद्यार्थी स्कूल छोड़कर अस्पताल मिलने आ पहुंचे।“

मुकेश उस समय अभिभूत हो गये जब दो साल पहले कुछ उनके विद्यार्थियों ने अपने भविष्य की योजनाओं के बारे में उनसे पूछा। उन्होंने इसके लिए विद्यार्थियों को अनुभवी शिक्षक के पास जाने की सलाह दी। उन्होंने कहा, “मैंने उस वक्त अपने आप को काफी गौरवान्वित महसूस किया जब विद्यार्थियों ने बताया कि वह मेरे पढ़ाने के तरीके से काफी प्रभावित है और मेरी सलाह को तवज्जो देते है। एक शिक्षक के रूप में मेरे लिए विद्यार्थियों द्वारा यह सबसे कीमती उपहार था।“

खेम चन्द्र शर्मा ने भी कहा कि उन्हें अच्छा लगता है, जब उनके द्वारा पढ़ाये गये पुराने विद्यार्थी अभी भी उनसे जुड़े है और उनसे सलाह मांगते रहते है।

सभी को लगता है कि नेत्रहीनों के बारे में जागरूकता बढ़ाना उनके लिए काम करने के बेहतर माहौल का सृजन करने में मददगार होगा।

मुकेश गौतम ने कहा, "हम अपने प्रदर्शन की बदौलत अपने सहयोगी के बीच जागरूकता उत्पन्न कर सकते है। हमें समाज में अपनी जगह बनाने के लिए सौ फीसदी से भी ज्यादा देने की आवश्यकता है।"

मुकेश गौतम कहते है, "यह समाज का रवैया होता है जो किसी विशेष रूप से समर्थ को असमर्थ बनाता है। इस कारण से समाज के रवैये में बदलाव वांछित परिणाम दे सकता है और यह केवल कठिन परिश्रम, धैर्य और प्रदर्शन के सहारे मिल सकता है। काम कठिन है लेकिन असंभव नहीं है। इसके अतिरिक्त, संवेदनशीलता को सृजन करना ही काफी नही है, हमें समाज में उचित स्थान बनाने के लिए केन्द्रित होना पड़ेगा। साथ ही, आवश्यक सहयोगी वस्तुओं की उपलब्धता और तकनीकी सहयोग हमारी प्रतिभा को और बढ़ा सकता है।"

निशक्तजनों के लिए रोजगार में 03 प्रतिशत आरक्षण के तहत 01 प्रतिशत आरक्षण नेत्रहीनों के लिए है। इससे नेत्रहीन अध्यापकों को सरकारी स्कूलों और कॉलेजों में रोजगार प्राप्त करने में सहायता मिली है। अभी हाल में बजट 2014-15 के तहत सरकार ने घोषणा की है कि 15 नयी ब्रेल प्रेस लगाई जाएंगी और मौजूदा 10 ब्रेल प्रेसों को दुरुस्त किया जाएगा। इससे निश्चित रूप से ब्रेल लिपि में और अधिक पुस्तकें उपलब्ध होंगी, जिनसे नेत्रहीनों को लाभ होगा। जैसा कि नेत्रहीन अध्यापकों ने बताया है कि इस विषय में और भी काम किये जाने की आवश्यकता है ताकि उन्हें उचित वातावरण और आवश्यक सहायता एवं सुविधाएं प्राप्त हों, जिसके आधार पर वे अध्यापन के पुनीत कार्य को अपनी पूरी क्षमता के साथ कर सकें और छात्र लाभान्वित हो सकें।

(स्रोत: पसूका)